

सेमेस्टर-2

हिंदी(प्रतिष्ठा)

नागमती का वियोग-खंड

प्रसंग:- इन पंक्तियों में बारहमासे के माध्यम से जायसी ने नागमती की विरह- वेदना का चित्रण किया है। कवि कहता है कि प्रत्येक ऋतु का विरहिणी पर अत्यंत मार्मिक प्रभाव पड़ता है।

व्याख्या:- आषाढ़ का महीना लग गया है और आकाश में बादलों ने गर्जन शुरू कर दिया है। धुंधले और श्वेत रंग के बादलों से पूरा आकाश भर गया है। बादलों की इस गर्जना को सुनकर विरहिणी नागमती को ऐसा लग रहा था मानो विरह ने अपनी सेना सजाकर युद्ध के नगाड़े बजा दिया है। बगुलों की श्वेत पंक्ति ही मानो आकाश में फहराती हुई सफेद पताका है। तलवार रूपी बिजली चमक रही है और बूंद रूपी बाणों की घनघोर वर्षा हो रही है। आकाश में घिरी काली- काली घटाओं से काम भावना उत्पन्न हो रही है। अतः वह अपने प्रियतम को पुकारती हुई कहती है कि हे प्रिय कामदेव ने मुझे घर लिया है, अब तुम ही आकर मुझे इससे बचाओ। वर्षा ऋतु में मेढक, मोर, कोयल, पपीहा मधुर स्वर में बोल रहे हैं। बिजली चमक रही है। इस संपूर्ण दृश्य को देखकर मुझे ऐसा लगता है कि अब मेरे प्राण नहीं बचेंगे। हे प्रिय, अब तो वर्षा ऋतु का पुष्य नक्षत्र लग गया है और आपके बिना मेरी कोई रक्षा नहीं कर सकता है। मैं अपने प्रियतम के बिना घर में अकेली हूँ। मैं तो मानती हूँ कि जिनके प्रियतम घर पर हैं, वे स्त्रियां ही सौभाग्यशाली और सुखी हैं। मेरा प्रियतम तो घर से बाहर परदेस में है। अतः मैं तो अपने संपूर्ण सुखों को भुला चुकी हूँ।

विशेष:- 1. उद्दीपन रूप में प्रकृति का चित्रण किया गया है। 2. वर्षा ऋतु के दो नक्षत्रों का उपर्युक्त पंक्तियों में उल्लेख किया गया है।

डॉ.प्रकाश कुमार अग्रवाल

हिंदी-विभाग, खड़गपुर कॉलेज